काम के प्रति बाइबल का रवैया

काम

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण : मई 2016

अनुवादक : डॉर्थी शरदकान्त थॉमस
प्रूफ रीड़िंग : शरदकान्त थॉमस
मुखपृष्ठ एवं ग्राफिक डिज़ाईन : करूणा जेरोम, बाईफेथ डिज़ाईनूज

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Biblical Attitude Towards Work)

काम के प्रति बाइबल का रवैया

विषयसूचि

1.	काम परमेश्वर की कल्पना है	1
2.	काम के प्रति गलत रवैया	3
3.	काम के प्रति विश्वासी का दृष्टिकोन	6
4.	विश्वासियों को काम करने की आज्ञा दी गई है	11
5.	सात सही प्रवृत्तियां	19
6.	आपके काम के संबंध में प्रतिज्ञाएं	24
7.	नई दुनिया में काम	28

1
काम परमेश्वर की कल्पना

तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा साँझ हुई, फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया (उत्पत्ति 1:31)।

इस तरह आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया। और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया। और परमेश्वर ने सातवे दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसमें उसने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया (उत्पत्ति 2:1–3)।

यहां पर हम परमेश्वर को काम करते हुए देखते हैं। उसने छः दिन काम किया और सातवें दिन विश्राम किया। परंतु जिस प्रकार हम थकान की वजह से विश्राम करते हैं, उस तरह उसने थकान की वजह से विश्राम नहीं किया। उसे जो करना था, उसने पूरा किया – सृष्टि की उत्पत्ति का काम पूरा किया। उसने देखा कि जो कुछ उसने किया था वह अच्छा और परिपूर्ण था। अतः उसने कुछ समय विश्राम किया।

परंतु जिस क्षण आदम ने पाप किया, उस क्षण परमेश्वर ने फिर काम करना आरंभ किया। परंतु इस समय यह छुटकारे का काम था – मानव को वापस स्वयं की ओर लाना। उस समय से परमेश्वर निरंतर काम में लगा हुआ है, वह मानवजाति के लिए परमेश्वर के छुटकारे की योजना को प्रगट कर रहा है। परमेश्वर कार्य करता है!

जब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे (उत्पत्ति 2:15)।

परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका में रखकर उसे यह नहीं कहा, "आदम, तुम्हें केवल मेरी आराधना करना है।" पतन से पहले ही परमेश्वर ने आदम को एक काम सौंपा था। आदम का काम था "भूमि जोतना" (मेसेज बाइबल) और वाटिका की देखरेख करना। यह उसका काम था! पतन से पहले ही परमेश्वर ने काम की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

पाप में गिरने के बाद, आदम को भूमि जोतने का काम जारी रखना पड़ा, फर्क केवल इतना था कि अब भूमि श्रापित हो गई थी और अब आदम को फसल पाने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना था (उत्पत्ति 3:17–19)। हम सब यह मानते हैं कि विवाह परमेश्वर की कल्पना है – इसलिए हम विवाह का आनंद उठाते हैं। हम जानते हैं कि कलीसिया परमेश्वर की कल्पना है – इसलिए हम कलीसिया के द्वारा आनंद मनाते हैं। सुसमाचार यह है कि काम भी परमेश्वर की कल्पना है। परमेश्वर ने कार्य की संस्थापना की! अतः काम करने से आनंदित हों!

परमेश्वर ने काम किया।
परमेश्वर ने काम की संस्थापना की।
अतः हम उससे आनंदित हों!

2
काम के प्रति गलत रवैया

काम एक बाधा

हममें से कई लोग परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को पूरा करने के विषय में अत्यंत उत्साहित होते हैं। परंतु हम सब के पास एक 'काम' या नौकरी है जिसे पूरा करने के लिए हमें सप्ताह में से पांच या छः दिन जाना है। कभी कभी हम सोच सकते हैं, "काश, मुझे इस काम से छुटकारा मिले, तो मैं यीशु की सेवा के लिए स्वतंत्र रहूंगा।" हमारा 'काम' या 'नौकरी' हमें अपनी स्वर्गीय बुलाहट को पूरा करने के मार्ग में एक बड़ी रुकावट लगती है। यह अत्यंत गलत रवैया है। हमें ध्यान में रखना है कि जब तक हम इस पृथ्वी पर हैं, हमें काम करने की ज़रूरत है – हम में से जो पूर्णकालीन सेवा में हैं, उन्हें भी।

जब मैं करीब बारह वर्ष का था, तब मैंने उद्धार पाया। उस समय मैं बैंगलोर के बिशप कॉटन बॉय्ज़ स्कूल में पढ़ता था। मैं यीशु के लिए अत्यंत आवेशी था, और अवसर मिलते ही उसके विषय में प्रचार करता था। कभी कभी मैं प्रचार करने के अवसर उत्पन्न किया करता था। ? याद है मैं अपनी कक्षा में खड़ा हो गया और मैंने अपनी पूरी कक्षा को यीशु के विषय में बताया। मैं पड़ोस के दो स्कूलों में भी जाने लगा – बाल्डविन बॉय्ज़ स्कूल और कैथेड्रल स्कूल। – और यीशु के विषय में प्रचार करने लगा। परंतु स्कूल जाना मुझे मेरी इस उभरती सेवकाई के मार्ग में मुझे रुकावट प्रतीत होने लगी, और जिसे 'अध्ययन' कहते हैं, वह बात आशीष के बजाय बाधा लगने लगी। ऐसा लगता था कि मेरे हृदय के अंदर एक गुप्त प्रार्थना है : "हे प्रभु, मुझे इससे छुड़ा। प्रभु, यदि आप मुझे पाठशाला जाने से और अध्ययन से छुटकारा देंगे, तो मैं आपके राज्य के लिए ज़्यादा काम कर सकूंगा और लोगों को यीशु के बारे में अधिक बता पाऊंगा।" परमेश्वर की स्तुति हो कि कि उसने मुझे उससे नहीं छुड़ाया! मैंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की और

इंजीनियरींग कॉलेज में गया, और उसके उपरान्त जैसे जैसे समय बढ़ता गया, मैं समझने लगा कि मुझे अध्ययन करना क्यों ज़रूरी है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने मुझे अध्ययन बंद करने के लिए नहीं कहा। परंतु मैं यह स्वीकार करूंगा कि एक समय ऐसा था जब अध्ययन करना और पाठशाला जाना परमेश्वर के उद्देश्यों की ओर बढ़ने में बड़ी रुकावट प्रतीत होते थे। उन किताबों को पढ़ना, अपना गृहकार्य करना और उन परीक्षाओं में बैठना मुझे बाइबल पढ़ने, प्रार्थना करने, गवाही देने और प्रचार करने की तुलना में अत्यंत महत्वहीन प्रतीत होता था। बाद में मैंने जाना कि काम के प्रति यह गलत रवैया है।

काम एक बंधन

कुछ लोग काम को बंधन मानते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि वे बंधन में पड़े मज़दूर या काम करने वाले गुलाम हैं। वे निरंतर सोचते हैं, "मुझे पसंद हो या न हो, मुझे सुबह उठना होगा और काम पर जाना होगा।" काम के स्थान पर कुछ नियम होते हैं, जो समस्या को और अधिक बढ़ाते हैं। हम कहां काम करते हैं उसके अनुसार हमें वहां सुबह 9 बजे पहुंचकर सन्ध्या 6 या 7 बजे तक काम करना पड़ता है। काम के स्थान पर, हमें केवल कुछ ही निश्चित कामों को करने की अनुमति होती है, हम अन्य काम नहीं कर सकते। इस वजह से, कुछ लोग काम को बंधन समझते हैं। हम में से कुछ लोग नियमों और अधिकारियों के विरोध में विद्रोह करते हैं।

हमें यह समझने की ज़रूरत है कि काम के स्थान पर नियम बंधन नहीं हैं, परंतु वस्तुतः वे अनुशासन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। हमें बंधन और अनुशासन के मध्य अंतर को समझना है। हमारे पास मसीह में आज़ादी और स्वतंत्रता है (गलतियों 2:4; 5:1; 2 कुरि. 3:17)। परंतु हमें यह भी समझना है कि मसीह में हमारे पास जो स्वतंत्रता है, उसके लिए सीमाएं भी हैं (गलतियों 5:13)। इसलिए हम चाहे जो चाहें, वह नहीं कर सकते। इसलिए काम को बंधन के रूप में नहीं देखना है, परंतु खुद को अनुशासित करने का अवसर मान कर चलें।

काम एक बुराई

कुछ लोग काम को एक बुराई मानते हैं – ऐसा काम ताकि हमारे बिलों का भुगतान किया जा सके। अर्थात हमें काम करना है ताकि हम खा सकें और हमारे परिवारों का प्रयोजन कर सकें। परंतु कई लोग अपने काम से आनंदित नहीं होते और शिकायत करते और कुड़कुड़ाते हैं। विश्वासी होने के नाते, हमें अपने काम के आनंद को अनुभव करना है और उसे बुराई मानना बंद करना है।

काम एक पूजा या आराधना

कुछ लोग इस गलत धारणा के साथ काम और काम और काम करते रहते हैं कि काम ही पूजा है। इस प्रवृत्ति ने हमारी कार्य संस्कृति पर प्रभुता करना आरंभ किया है। काम पूजा नहीं है क्योंकि आराधना या उपासना परमेश्वर के साथ वार्तालाप है। आप परमेश्वर के विषय में सोचे बगैर ही काम पूरा कर सकते हैं।

काम के प्रति गलत रवैया

काम एक बाधा

काम एक बंधन

काम एक बुराई

काम एक पूजा या आराधना

3
काम के प्रति विश्वासी का दृष्टिकोण

विश्वासी होने के नाते, काम के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण होना चाहिए? परमेश्वर ने जो काम, व्यवसाय और करियर दिया है, उसके प्रति हम किस दृष्टि से देखें? यहां तीन दृष्टिकोण दिए हैं जिन्हें मैं हर विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण मानता हूं :

काम एक ज़रिया है

हमारा काम, नौकरी या रोजगार इस पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को अमल में लाने का ज़रिया है। यह वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर के उद्देश्य इस पृथ्वी पर मुक्त किए जाते हैं। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति के जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य को पूरा करने हेतु काम परमेश्वर द्वारा दिया गया साधन है। मैं इस बात को समझता हूं कि कुछ लोगों को पूर्णकालीन सेवा के लिए बुलाया गया है। परंतु पूर्णकालीन सेवकाई भी एक अर्थ से "काम" है।

काम एक कार्यनीति है

हमें समझना है और हमारे कार्य के की ओर इस रूप में देखना है कि वह परमेश्वर की कार्यनीति का एक हिस्सा है ताकि हमें उसके उद्देश्य और इच्छा को पूर्ण करने हेतु समर्थ बना सके। उदाहरण के तौर पर, विश्वासी होने के नाते, आपके मन में लोगों को प्रभु के लिए जीतने का बोझ हो। आपकी नौकरी और आपका व्यवसायिक करियर आपको लोगों के संपर्क में लाएगा, जिन्हें आप अन्यथा कभी नहीं मिल सकते। आपको अभी अपने काम को एक दैवी कार्यनीति के रूप में देखना है। परमेश्वर कार्यनीति के रूप में आपके व्यवसाय को उपयोग कर रहा है और आपको उन लोगों से जोड़ रहा है जिन्हें वह चाहता है कि आप मसीह के विषय में बताएं। आपकी नौकरी आपका 'पुलपिट' है और जिन लोगों से आप संपर्क करते हैं, वे आपका 'पॅरिश – धर्मप्रान्त' है।

काम तैयारी की प्रक्रिया है

काम मात्र वह स्थान नहीं है जहां पर पैसा कमाते हैं, परंतु वह स्थान भी है जहां परमेश्वर हमारे चरित्र का निर्माण करता है। वह हमारी तैयारी की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। हम अक्सर सोचते हैं कि चरित्र मात्र सण्डे स्कूल, गिरजाघर या बाइबल स्कूल में निर्माण होता है, परंतु परमेश्वर किसी भी स्थान में हमारा चरित्र बना सकता है। वह हमारे जीवनों में प्रति दिन 24 घण्टे काम करता है।

हमारे काम के स्थानों पर, परमेश्वर हमें सिखा सकता है कि लोगों के साथ कैसे व्यवहार करें, विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त करें, ईश्वरीय बुद्धि कैसे हासिल करें और कैसे समस्याओं का समाधान करें। हमारे काम के स्थानों पर कुछ लोगों का संपर्क ऐसे लोगों से होगा जो हमारे शरीर में कांटों के समान चुभेंगे, ऐसे लोग जिनके साथ हम संबंध नहीं बना सकते। परंतु परमेश्वर काम के स्थानों के मध्य ही हमारे चरित्र का निर्माण कर सकता है। हमारे काम के स्थानों में, हमें नए कौशल सीखने के और हमारी योग्यताओं का विकास करने के अवसर मिल सकते हैं, जिनका उपयोग परमेश्वर अपने राज्य के विस्तार के लिए करे। उदाहरण के तौर पर, आपके काम के स्थान में आपके पास नेतृत्व गुण हो सकते हैं और परमेश्वर उन गुणों का उपयोग आपकी स्थानीय कलीसिया में किसी सेवकाई में करे और आपको उस स्थान में आशीष का कारण बनाए।

हम बाइबल के कुछ किरदारों पर विचार करें।

यूसुफ

"भविष्यात्मक स्वप्न और योजना का पूरा होना"

यूसुफ के विषय में सोचें। यूसुफ के पास परमेश्वर द्वारा दिया गया स्वप्न, परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन था। सब कुछ त्याग कर वह "पूर्णकालीन" सेवा के लिए नहीं चल पड़ा। यूसुफ परमेश्वर की तैयारी की प्रक्रिया से होकर गुज़रा। इस प्रक्रिया में उसे पोतिफर के घर में

काम करने हेतु मज़बूर होना पड़ा और जो काम उसे वहां पर सौंपा गया, उसे करना पड़ा। वहां से उसे बिना किसी अपराध के कैद में डाल दिया गया और कैदखाने में भी उसे काम करना पड़ा। उसे बाकी सारे कैदियों पर देखरेख करने वाला नियुक्त किया गया। उसके बाद उसे मिस्र देश का प्रधान मंत्री का पद प्राप्त हुआ और यहां पर भी उसे काम करना पड़ा। उसे पूर्णकालीन सेवकाई के लिए नहीं बुलाया गया था, फिर भी परमेश्वर ने उसे अपने ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करने हेतु स्थान पर नियुक्त किया। यूसुफ ने मिस्र देश के प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया और परमेश्वर ने इसे उस स्वप्न को पूरा करने का साध ान बनाया जो उसने यूसुफ को एक बालक के रूप में दिया था। यदि यूसुफ प्रधान मंत्री के रूप में अपना काम त्याग देता और जंगल में कहीं किसी मठ में जाकर बैठ जाता, तो क्या होता? शायद परमेश्वर द्वारा दिए गए स्वप्न को पूरा होते वह कभी नहीं देख पाता!

इस सच्चाई पर विचार करें। यूसुफ से कई वर्ष पहिले, परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बात की और कहा कि वह उसकी संतान को किसी पराए देश में ले जाएगा। फिर उसने अब्राहम से कहा, "तब यहोवा ने अब्राम से कहा, यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, और उस देश के लोगों के दास हो जाएंगे; और वे उनको चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे; फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दण्ड दूंगाः और उसके पश्चात् वे बड़ा धन वहां से लेकर निकल आएंगे।" (उत्पत्ति 15:13,14)। परमेश्वर ने यूसुफ को परमेश्वर द्वारा दिए गए कौशल और 'व्यावसायिक' करियर का उपयोग उसे स्थान में रखने के ज़रिया के रूप में किया ताकि वह इस भविष्यात्मक योजना को पूरा कर सके।

हममें से कई लोग समाजों, शहरों और राष्ट्रों के लिए परमेश्वर की भविष्यात्मक योजनाओं के प्रति अनजान हैं। उसके पास 'कैरोस' क्षण (यूनानी भाषा के कैरोस का उपयोग विशेष घटनाओं, उपयुक्त क्षणों, महत्वपूर्ण घटनाओं और समय में बदलावों के लिए होता है) और

ईश्वरीय प्रवेश के क्षण हैं (कब्जे), जहां पर अवसर के द्वार समाजों, शहरों और राष्ट्रों के लिए खुल सकते हैं। परमेश्वर 'यूसुफ' की खोज में है, जिन्हें वह उनके गुणों और व्यावसायिक योग्यताओं का उपयोग करते हुए समाजों, शहरों और राष्ट्रों के लिए अपनी भविष्यात्मक योजनाओं को पूरा करने हेतु स्थानापन्न कर सके।

दाऊद, दानिय्येल और पौलुस

"आत्मिक और संसारिक की सहक्रिया"

दाऊद भजन का लेखक, भविष्यद्वक्ता और राजा था। दानिय्येल न केवल भविष्यद्वक्ता था, बल्कि प्रधान मंत्री भी था जो देश का प्रशासन चलाता था और राजा के कामकाज का ध्यान रखता था। पौलुस के विषय में विचार करें। हम उसे एक ऐसे महान प्रेरित के रूप में जानते हैं जिसने अधिकतर नए नियम का लेखन किया। हमारे पास पर्याप्त प्रमाण है जिससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि कम से कम तीन शहर – इफिसुस, कुरिन्थुस और थिस्सलुनीका – में उसने अपनी और अपनी सेवकाई टीम की ज़रूरतों को पूरा करने हेतु काम किया। वह अपने हाथों से काम करता था और उसने अपनी ज़रूरतों का खुद ही ध्यान रखा, जिनके मध्य वह सेवकाई कर रहा था उनके लिए वह बोझ नहीं बना।

दाऊद, दानिय्येल और पौलुस में हम 'आत्मिक' और 'संसारिक' की सहक्रिया – एक साथ मिलना – देखते हैं। हमें ऐसे स्थान पर आना है जहां पर हम काम को एक संसारिक बात के रूप में और परमेश्वर के साथ चलने को आत्मिक और काम से भिन्न के रूप में न देखें। अपने काम को परमेश्वर के साथ आपके जीवन का एक हिस्सा मानें। यह आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना का एक भाग है। दाऊद, दानिय्येल या पौलुस काम करते थे, इसलिए उन्होंने अपना अभिषेक नहीं खो दिया! आपका काम 'आत्मिक' है केवल इसलिए क्योंकि परमेश्वर काम करता है।

हमारे काम के स्थानों पर, परमेश्वर हमें सिखा सकता है कि लोगों के साथ कैसे व्यवहार करें, विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त करें, ईश्वरीय बुद्धि कैसे हासिल करें और कैसे समस्याओं का समाधान करें।

4
विश्वासियों को काम करने की आज्ञा दी गई है

नए नियम में, प्रभु यीशु ने विश्वासियों को महान आदेश दिया कि वे जाकर सारे संसार में सुसमाचार सुनाएं। नए नियम की कलीसिया अच्छी तरह से यह तरीका अपना सकती थी जहां वह जाकर उस हर उद्धार पाए व्यक्ति से कह सकती थी कि वह हर संसारिक कार्य त्याग दे और मात्र सुसमाचार सुनाए। परंतु यह देखना अत्यंत दिलचस्प है कि प्रेरित पौलुस ने विश्वासियों से क्या करने के लिए कहा है।

अपने हाथों से काम करें

"चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे; वरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे; इसलिए कि जिसे आवश्यकता हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो।" (इफिसियों 4:28)।

जो चोरी करता था, अब उसे चोरी नहीं करनी चाहिए, परंतु अपने हाथों से काम करना है। उसे अपने हाथों से परिश्रम करना है, उसे जो सही है और जो भला है वही करना है, ताकि उसके पास उसकी ज़रूरतों के लिए, और दूसरे ज़रूरतमंद लोगों को देने के लिए भी पर्याप्त हो। यहां पर पौलुस ने विश्वासियों को उनके अपने हाथों से काम करने का मूल्य और महत्व सिखाया। उसने उन्हें वह काम भी करने का निर्देश दिया जो अच्छा है। इसका मतलब यह है कि विश्वासियों को ऐसे कामों में हाथ नहीं डालना है जो बेईमानी का या भ्रष्ट है।

ताकि तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो

और जैसी हमने तुम्हें आज्ञा दी, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना अपना काम काज करने, और अपने अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो; और

बाहरवालों के साथ सभ्यता से बर्ताव करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो" (1 थिस्सल. 4:11,12)।

पौलुस ने विश्वासियों से कहा कि वे अपने हाथों से परिश्रम करें ताकि उद्धार न पाए हुए लोगों को उन पर अनुचित आचरण के लिए दोष लगाने का कोई अवसर न मिले। यह भी देखें कि अपने हाथों से काम करने का संबंध किसी प्रकार की घटी न होने से भी है या हमारी सारी ज़रूरतों के पूरे होने से है। यह सच है कि परमेश्वर ने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वह अपने महिमा के धन के अनुसार हमारी सारी ज़रूरतों को पूरा करेगा (फिलिप्पियों 4:19)। परंतु यह भी सच है कि परमेश्वर ने अपने वचन में हमें आज्ञा दी है कि हम काम करें, इसके द्वारा यह दर्शाया है कि परमेश्वर हमारे काम को एक माध्यम के रूप में उपयोग करेगा जिससे वह हमारी ज़रूरतों को पूरा करे। हमारे काम के माध्यम से परमेश्वर का हमारी ज़रूरतों का पूरा करना उतना ही अलौकिक है जितना कि एक कौए का पैसों का पुलिन्दा ले आना! यह उतना अभुतपूर्व नहीं होगा, परंतु निश्चय ही अलौकिक है, क्योंकि वही परमेश्वर हमारी ज़रूरतें पूरा करता है। याद रखें कि नौकरी पाने, उसे बनाए रखने और अपने संपूर्ण व्यावसायिक करियर के दौरान वेतन और वेतन वृद्धि पाने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह और ईश्वरीय प्रयोजन की ज़रूरत है।

कुछ लोग इस इंतज़ार में हैं कि परमेश्वर 'अलौकिक' ज़रिये से उनकी ज़रूरतों को पूरा करे, जैसे लोग आकर उनके हाथों में पैसा रख कर जाएं या डाक द्वारा उन्हें चेक मिले। जब वे ऐसा होते हुए नहीं देखते, तब वे सोचते हैं कि परमेश्वर उन्हें नहीं दे रहा। परंतु परमेश्वर ऐसे लोगों का इंतज़ार करता है कि वे उस माध्यम को अपनाएं जिसके द्वारा परमेश्वर उनकी आपूर्ति करेगा। कुछ मामलों में, परमेश्वर उनका इंतज़ार करता है कि वे नौकरी करें और कुछ समय तक उस नौकरी में बने रहें। वह नौकरी उनके जीवनों के लिए प्रयोजन का परमेश्वर का ज़रीया है।

यदि आप काम नहीं करते, तो खाए ना

क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए; क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल न चले। और किसी की रोटी सेंत में न खाई; परंतु परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे, ताकि तुममें से किसी पर भार न हो। यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं; परंतु इसलिए कि अपने आप को तुम्हारे लिए आदर्श ठहराएं, कि तुम हमारी सी चाल चलो। और जब हम तुम्हारे यहां थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए। हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं; और कुछ काम नहीं करते, परंतु औरों के काम में हाथ डाला करते हैं। ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।" (2 थिस्सल. 3:7–12)।

नया नियम हमें आज्ञा देता है कि हम अनुचित चाल चलने के बजाय, बिना किसी काम को किए दूसरों के भरोसे जीविका चलाने के बजाय, शांति के साथ अपना काम करें और अपनी रोटी खाएं। काम विश्वासियों के लिए नए नियम की आज्ञा है।

अपने परिवार की ज़रूरतों का प्रयोजन करना

परंतु यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है (1 तीमु. 5:8)।

मैं उन लोगों को चुनौती देता हूं जिन्हें पूर्णकालीन सेवा के लिए बुलाया गया है। सेवकों, आपको कुछ बातें ध्यान में रखना हैं; परमेश्वर ने अपने वचन में आपको कुछ ज़िम्मेदारियां दी हैं जिन्हें आपको पूरा करना है। इनमें से एक है अपने घराने का ध्यान रखना। कई स्त्री और पुरुष जल्दबाजी में अपनी नौकरी त्याग देते हैं और विश्वास से जीवन बिताने का दावा करने लगते हैं। विश्वास से जीने का मतलब नौकरी त्यागना नहीं है। नौकरी में बने रहने के लिए विश्वास की ज़रूरत होती है। कभी कभी लोग अपनी नौकरियां त्याग देते हैं, सेवकाई में जाते हैं

और फिर अपने परिवार के सदस्यों को भोजन खिलाने के लिए संघर्ष करते हैं। मैं कुछ मुश्किल समयों के विषय में नहीं बोल रहा हूं, क्योंकि हममें से सभी को उसमें से होकर गुज़रना पड़ता है। लेकिन यदि आप अपने परिवार की ज़रूरतों को प्रतिदिन और प्रति माह पूरा नहीं करेंगे, क्योंकि आप पूर्णकालीन सेवा में हैं, तो आपको तब तक नौकरी करने के विषय में सोचना होगा, जब तक कि आपकी सेवकाई आपकी ज़रूरतें पूरी कर पाने की स्थिति में नहीं होती। अतः पूर्णकालीन सेवकाई की ओर अपना कदम बढ़ाने से पहले, यह बात निश्चित कर लें कि आप अपनी और अपने परिवार की आर्थिक ज़रूरतों का ध्यान रख पाएं। यदि आप अपनी पत्नी और बच्चों की देखभाल नहीं करने तैयार नहीं हैं, तो विवाह न करें। परमेश्वर की इच्छा है कि आप अपने घराने के लिए ज़िम्मेदार रहें।

मेरी गवाही

बैंगलोर में मेरी प्रारंभिक शिक्षा के दिनों में, सेवकाई के लिए मुझे बहुत जोश था। मैंने प्रार्थना की कि मैं अपनी दसवीं कक्षा पूरी होते ही पूर्णकालीन सेवा में जा पाऊं। ऐसा करने के बाद, मैंने अपने माता–पिता को बहुत मुश्किल में डाल दिया और यह जिद्द करता रहा कि मैं अपनी संसारिक शिक्षा पूरी नहीं करना चाहता, और बाइबल सेमिनरी जाना चाहता था। इसलिए मैंने भारत के बाइबल कॉलेजों की जानकारी ली और पूना के बाइबल कॉलेज को पत्र भेजा। उन्होंने यह कह कर वापस पत्र भेजा कि मेरी उम्र कम है और बाइबल कॉलेज में दाखिला पाने की कम से कम योग्यता बारहवीं कक्षा का होना थी। मैं वह पत्र पाकर निराश हो गया। संसारिक शिक्षा के केवल दो वर्ष मुझे पूरे करने थे, अतः आवश्यक शिक्षा पूरी करने के बाद मैंने सेमिनरी में दाखिल होने का फैसला लिया।

लेकिन अगले दो वर्षों में मेरे साथ कुछ हुआ। मैं बैंगलोर में किसी चर्च में जाता था और मैं वहां पर कुछ देखने लगा। मैंने दो तरह के लोग देखे – एक समूह जो सेवा करता था और कलीसिया में विभिन्न तरह से अपनी सेवा प्रदान करता था, और दूसरे वर्ग के लोग बहुसंख्या

में थे और कुछ नहीं करते थे। दूसरे वर्ग में अधिकतर विद्यार्थी और पेशेवर थे जो हर प्रकार की सेवकाई से बहाना बनाकर बच निकलते थे क्योंकि वे खुद को अपनी नौकरी में व्यस्त पाते थे। मैं सोचने लगा कि अधिकतर अयाजकीय विश्वासी क्यों कभी सेवकाई में शामिल नहीं होते। इसी समय के दौरान मैंने अपने दिल में एक संकल्प किया। मैंने संकल्प किया कि मैं अपने जीवन के द्वारा लोगों को यह दिखा दूंगा कि व्यक्ति नौकरी, व्यवसाय सम्हालकर और 'सामान्य जीवन' बिताकर भी परमेश्वर की सेवा कर सकता है। अतः जब तक मैं अपना बारहवीं का अध्ययन समाप्त करता, सेमिनरी जाने की मेरी इच्छा खत्म हो गई थी और इसके बजाय, जीवन में मुझे क्या करना है इस विषय में नए उद्देश्य का एहसास मुझे हो गया।

इस दौरान, परमेश्वर ने मेरे हृदय में बैंगलोर शहर में एक मज़बूत कलीसिया स्थापित करने की और उसके द्वारा संपूर्ण भारत देश में पहुंचने और विश्व को राष्ट्रों को प्रभावित करने की इच्छा उत्पन्न की। इसलिए मैंने स्कूल में बारहवीं का अध्ययन पूरा किया और उसके बाद मेरे माता–पिता ने मुझे इंजीनियरिंग के अध्ययन के लिए मनिपाल भेजा। अब तक मैंने अपने अध्ययन को बोझ के रूप में देखना बंद कर दिया था और समझने लगा था कि मेरी शिक्षा मेरी ईश्वरीय योजना का एक भाग है। मेरी शिक्षा की वजह से मैं खुद को ऐसे स्थान में देख सका जहां पर मैं परमेश्वर के राज्य के लिए ज़्यादा से ज़्यादा लोगों से संपर्क कर सकता था। मनिपाल में महाविद्यालय के आवास में, मैंने देशभर के और विश्व के अन्य भागों से आए हुए सैकड़ों विद्यार्थियों को देखा। मेरे वहां पर अध्ययन करने के पीछे एक आत्मिक उद्देश्य था।

मेरे हृदय में वहीं पर परमेश्वर की सेवा करने की और आत्माओं को जीतने की इच्छा थी। जनवरी 1989 में, इंजीनियरींग के मेरे तीसरे वर्ष के दौरान, परमेश्वर ने मेरी अगुवाई की कि मैं वहां पर एक विद्यार्थी सहभागिता की स्थापना करूं जो बाद में स्थानीय कलीसिया में बदल गई और आज तक शुरू है। अब मुझे मेरी शिक्षा एक बोझ, बुराई या बंधन नहीं लगती थी। मैंने उसे मेरी भविष्य की सेवा के लिए एक दैवी

योजना, एक साधन और तैयारी की प्रक्रिया के रूप में समझा। इंजीनियरींग में अपनी स्नातक पदवी प्राप्त करने के बाद, मैंने अपना अध्ययन जारी रखने का फैसला किया। मेरे माता–पिता ने मुझे उच्च शिक्षा के लिए यूनायटेड स्टेट्स जाने में सहायता की। ओहियो के क्लीव्हलैण्ड विश्व विद्यालय का इंजीनियरींग विभाग जहां मैंने दाखिला लिया था, यूनायटेड स्टेट्स के तीन सर्वश्रेष्ठ विभागों में से एक था।

परमेश्वर के अनुग्रह से मुझे दूसरे सत्र में दो तिहाई आर्थिक सहायता प्राप्त हुई और तीसरे सत्र से पूर्ण सहायता मिली।

विश्व विद्यालय में अध्ययन और संशोधन करते समय मैंने छोटी सी अंतर्राष्ट्रीय छात्र सहभागिता आरंभ की, इसमें भारत, इंडोनेशिया और मलेशिया से विद्यार्थी थे। उसके बाद मैं न्यू जेरेसी गया और कोरियन ख्रिश्चन फेलोशिप के साथ सहभागी हो गया जिसमें दो सौ मसीही छात्र थे। ये कोरियन छात्र किस आग्रह के साथ प्रार्थना करते थे यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था।

इस समय के दौरान, मैं नियमित रूप से विश्वविद्यालय के आवास में स्थित एक अफ्रिकी–अमेरिकी कलीसिया में सेवा करने लगा। एक साल से अधिक समय तक मैंने इस अफ्रिकी–अमेरिकी कलीसिया में हर बुधवार रात शिक्षा दी, और उनकी रविवार की सभाओं में, और समय समय पर तम्बुओं की सभाओं में भी प्रचार किया।

विवाह के बाद भारत से ॲमी भी मेरे साथ हो ली और मैंने विश्वविद्यालय छोड़ा और सॉफ्टवेयर व्यवसायी के रूप में काम करना शुरू किया। इस समय के दौरान, ॲमी और मैं दूसरे युवा हिस्पैनिक दम्पत्ति के साथ काम करने लगे और हमने न्यू ब्रन्सविक, न्यू जेरेसी में हिस्पैनिक कलीसिया की स्थापना की। यह बहुत अच्छा अनुभव था जिससे हम विभिन्न देशों और संस्कृतियों के लोगों के मध्य काम कर सके। भविष्य की सेवा के लिए यह प्रशिक्षण था, जो इसलिए संभव हुआ क्योंकि मैं अपने स्नातक के अध्ययन के लिए यू. एस. ए. गया।

सन 1998 में हम न्यू जेरेसी से शिकागो आए। 1999 में भारत में सेवा यात्रा के दौरान, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि अब हमारे भारत लौटने का और हमारे हृदय के दर्शन को पूरा करने का समय आ गया है। जनवरी 2001 पर हमने उस माह के रूप में चिन्ह लगाया जब हम ने बैंगलोर लौटने का निर्णय लिया। जब हम बैंगलोर से शिकागो आने की तैयारी करने लगे, तब हमारी मुख्य्य चिंता भारत में अपनी सेवकाई आरंभ करने हेतु संसाधनों को जुटाना था। शिकागो में हम एक बहुत ही छोटी सी कलीसिया का हिस्सा थे। वे अवश्य ही हमें एक बड़ी रकम नहीं दे सकते थे जिसकी हमें हमारे बड़े दर्शन को अमल में लाने हेतु ज़रूरत थी। जब हम प्रभु से प्रार्थना करते रहे, तब मैंने हृदय में स्पष्ट रूप से महसूस किया कि परमेश्वर चाहता है कि यहां लौटने के बाद भी मैं सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में काम करता रहूं। अपने व्यवसाय को बंद करने के विषय में मुझे परमेश्वर से कोई निर्देश नहीं मिले। इन वर्षों में, विशेषकर अमेरिका में हमारे निवास के अंतिम समय में, मेरे मन में एक कंपनी आरंभ करने की गहरी इच्छा हुई जिससे मसीही सिद्धान्तों के आधार पर कारोबार चलाया जाए और परमेश्वर के राज्य के लिए पैसा उपयोग में लाया जाए। काफी समय से मेरे मन में यह इच्छा बढ़ रही थी, लेकिन मैं नहीं जानता था कि यह कब और कैसे करें।

अंत में, समय आ गया कि हम भारत आएं। दिसंबर 2000 में हमने राष्ट्रों को सुसमाचार सुनाने के बड़े दर्शन के साथ यू एस ए छोड़ा, लेकिन हम नहीं जानते थे कि सेवकाई जारी रखने हेतु आवश्यक धन कहां से आएगा। हमारी सेवकाई के साथ यू एस ए में कुछ लोग हमारे साथ जुड़े हुए हैं जो हमारी सहायता करते हैं, परंतु जो दान हमें मिल रहा है, वह अवश्य ही हमारे बड़े दर्शन को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है!

जब हम बैंगलोर आए, परमेश्वर ने बड़े प्रेम के साथ हमें इस योग्य बनाया कि हम जनवरी 2001 में सॉफ्टवेयर सेवा कम्पनी का आरंभ करें। फरवरी 2001 में, हमने एक छोटी सी कलीसिया शुरू की – मेरे पिता के घर के बैठक के कमरे में। सॉफ्टवेयर कम्पनी का दसवांश

कलीसिया को दिया जाता था और इन पैसों से हम बहुत कुछ कर सकते थे – हमने किराये पर हॉल लिया, आवश्यक उपकरण लिए, पुस्तकों की छपाई करके हम उन्हें विनामूल्य बांटते हैं, केबल टी.वी. पर प्रचार करते हैं और हमारी अन्य सेवकाइयों को आर्थिक सहायता करते हैं। हमारा दर्शन बड़ा था और पैसों की कमी की वजह से हमारे हाथ बंधे हुए नहीं थे। सेवा की शुरूवात करने हेतु हमारे पास पर्याप्त और उससे अधिक संसाधन थे।

आज मैं पीछे मुड़कर देखता हूं, कि किस प्रकार परमेश्वर ने मेरी शिक्षा और व्यवसाय का उपयोग कर मुझे सेवकाई के लिए तैयार किया। मेरी शिक्षा और व्यवसाय के साथ प्रभु का काम करने के अवसर निकटता से जुड़े हुए थे। मुझे यकिन हो गया है कि काम परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य को पूरा करने का साधन और ईश्वरीय योजना का एक भाग है।

जब आप वही करते हैं जो परमेश्वर चाहता है कि आप करें, तब आपका काम बाधा या बंधन या बुराई नहीं होगी। यदि परमेश्वर आपको काम करने के लिए बुलाता है, तो काम को बुराई, बंधन या बाध ाा न समझें। पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए आपके जीवन के लिए ईश्वरीय योजना के एक भाग के रूप में उसे देखना

विश्वासियों को आज्ञा दी गई है कि वे काम करें।
अपने हाथों से काम करें। काम करें ताकि आपको किसी बात की घटी न हो।
यदि आप काम नहीं करते, तो खाए भी न! अपने घराने की ज़रूरतों को पूरा करें।

5
सात सही प्रवृत्तियां

हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते, और कांपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो। और मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिए सेवा न करो, पर मसीह के दासों के समान मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो। और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सुइच्छा से करो। क्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही पाएगा। और हे स्वामियो, तुम भी धमकियां छोड़कर उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उनका और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता (इफिसियों 6:5–10)।

हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से। और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिए नहीं, परन्तु प्रभु के लिए करते हो। क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इसके बदले प्रभु से मीरास मिलेगी। तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। क्योंकि जो बुरा करता है, वह अपनी बुराई का फल पाएगा; वहां किसी का पक्षपात नहीं। (कुलुस्सियों 3:22–25)।

दो अनुच्छेद अपनी शिक्षा में समानता रखते हैं। आज हमारे समय में स्वामी और दास की कल्पना नहीं है। परंतु हम स्वामी और दास की कल्पना को 'नियोक्ता' और 'कर्मचारी' के रूप में समझ सकते हैं, ताकि वे हमारे के लिए समयोचित हों।

काम के विषय में पौलुस सात प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करता है

पौलुस हमें आज्ञा देता है कि कर्मचारी होने के नाते हम अपने नियोक्ता के प्रति आज्ञाकारी रहें। इसका मतलब हमारे काम के स्थान पर हम दिए गए निर्देशों का अनुसरण करते हैं और नियमों का पालन करते हैं।

उसके बाद हमें हमारे नियोक्ताओं को आदर देना है (भय के साथ और कांपते हुए)। विद्रोही होने के बजाए और यह सोचने के बजाए कि हम अपने अधिकारियों से अधिक जानते हैं, हमें उन लोगों का आदर और सम्मान करना है जो काम के स्थान पर हमारे अधिकारी हैं।

पौलुस उद्देश्य की शुद्धता के विषय में कहता है, "मन की सीधाई" और "तन मन से।" अपने काम में ईमानदार बने रहें। "खराई" या "एक चित्तता" यूनानी शब्द से आते हैं जिसका अर्थ है, "बिना किसी कपट या स्वार्थ के।" इसका अर्थ यह भी है कि "उदारता के साथ, भरपूरी, दिलदार होना, और सीधाई।"

पौलुस कर्तव्यनिष्ठता के विषय में कहता है – जब कोई हमें नहीं देखता, तब जबाबदेही होना। वह कहता है, "मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिए नहीं।" इसकी प्रेरणा यह सच्चाई है कि हम मसीह के कर्मचारी हैं। यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि इसके पहले कि हम किसी कम्पनी या किसी संस्था के साथ हम काम करते हैं, उसके कर्मचारी होने से पहले, वास्तव में हम मसीह के कर्मचारी हैं। हमारे काम के स्थान पर, हम मसीह के कर्मचारी हैं। हम मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं, और अपने काम को वैसे ही करते हैं मानो, "हम मनुष्यों के लिए नहीं, परंतु प्रभु के लिए करते हैं," क्योंकि हम मसीह के लिए काम कर रहे हैं, जो हमारा मुख्य नियोक्ता है और हमें देख रहा है। वह देखता है कि हम समय पर काम पर जा रहे हैं या नहीं। वह हमारी वक्तशीरता या काम के स्थान पर हमारी उपस्थिति या अनुपस्थिति देखता है। हम किस वजह से काम पर नहीं थे, इसका वास्तविक कारण वह जानता है, भले ही हमने बीमार होने

का बहाना बनाकर या किसी और कारण से अवकाश लिया। हम काम के स्थान पर अपने समय का उपयोग कैसे करते हैं, वह देखता है। क्या हम वास्तव में काम कर रहे हैं या अपना समय बर्बाद कर रहे हैं? जिन "छोटे रास्तों को" हम अपनाते हैं, उन्हें वह देखता है। वह देखता है कि क्या हम झूठ दस्तावेज, गलत रिपोर्ट आदि तो नहीं बना रहे।

पौलुस हमारे काम के सम्बंध में कहता है, "जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि प्रभु के लिए करते हो।" जो काम हमें सौंपा गया है, उसे हम संपूर्ण ह्रदय से करें।

हमें सौंपा गया काम हमें अपने संपूर्ण मन से करने की ज़रूरत है। अधूरे मन से काम न करें। परंतु अपना सर्वस्व लगा दें। अपना उत्तम से उत्तम उसमें लगा दें। अपना काम ऐसा करें मानो आप वह यीशु के लिए कर रहे हैं।

उसके बाद पौलुस हमें निर्देश देता है, "मन की सिधाई से प्रभु की सेवा करते रहो।" अपने काम को प्रसन्नता से करें, कुड़कुड़ाते हुए या शिकायत करते हुए नहीं। मेसेज बाइबल इसे इस प्रकार लिखती है, "अपने चेहरे पर मुस्कान रख कर काम करें और इस बात को ध्यान में रखें कि आदेश देने वाला चाहे जो हो, आप वास्तव में परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं।"

अंत में पौलुस कहता है कि "अपने प्रतिफल के लिए हम प्रभु की ओर देखें।" मसीह आपका नियोक्ता है, अतः जब आप अपना काम कर चुकेंगे, तब आप इस बात के प्रति आश्वस्त रह सकते हैं कि वह विश्वासयोग्य रहकर आपको प्रतिफल देगा। जब आप अपने प्रतिफल के लिए परमेश्वर की ओर देखते हैं, तब आप संसार के समान आचरण करना बंद कर देते हैं! संसार के लोग आगे बढ़ने हेतु दूसरों को धक्का देते हुए और हर तरह के हथकण्डे अपनाकर आगे बढ़ते हैं। परंतु विश्वासी होने के नाते, हमें शांत, निश्चिंत रहना है और अच्छे मन से अपना काम करना है और अपने उत्तम प्रयासों को सेवा में लगाना है।

जब परमेश्वर काम के स्थान पर हमें तरक्की देने का फैसला करता है, तब कोई भी मनुष्य बाधा बनकर नहीं आ सकता! और इस बात को भी याद रखें, कि प्रतिफल का वह भाग आने वाले संसार में है। जब आप स्वर्ग में अपनी मीरास पाएंगे, तब आपको उसका पूरा प्रतिफल मिलेगा।

शायद मेसेज बाइबल से लिये गए कुलु. 3:22–25 के वचन इसे और स्पष्ट करते हैं।

हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से। और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिए नहीं, परन्तु प्रभु के लिए करते हो। क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इसके बदले प्रभु से मीरास मिलेगी। तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। क्योंकि जो बुरा करता है, वह अपनी बुराई का फल पाएगा; वहां किसी का पक्षपात नहीं। (कुलुस्सियों 3:22–25)।

पूर्णकालीन सेवकों के लिए सलाह

एक समय, बैंगलोर में एक पासबान ने मुझसे पूछा कि मैं अपने दफ्तर में कितने घण्टे काम करता हूं। मैंने उसे बताया कि मैं सामान्य काम का सप्ताह काम में बिताता हूं, करीब 40 से 50 घण्टे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि पूर्णकालीन सेवक होकर भी उन्होंने कभी कभी दिन में चार से पांच घण्टे भी काम में नहीं बिताए हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि पूर्णकालीन सेवकों – पासबान, सुसमाचार प्रचारक और अन्य सेवकों को समान कार्यनीति और कार्य अनुशासन का पालन करना चाहिए जैसा कि संसारिक सेवा में कार्यरत लोग करते हैं। आपको दिन में कम से कम आठ घण्टे सेवा का काम करना चाहिए, सप्ताह में कम से कम 40 घण्टे! काम की अच्छी आदतों को अपनाने हेतु आपको अनुशासित रहना है।

- मसीह जो हमारा मुख्य नियोक्ता है, हमें देखता है।
- वह देखता है कि क्या हम समय पर काम पर जाते हैं?
- वह हमारा वक्तशीर होना और काम पर हमारी उपस्थिति या अनुपस्थिति देखता है।
- हम किस वजह से काम पर नहीं थे, इसका वास्तविक कारण वह जानता है, भले ही हमने बीमार होने का बहाना बनाकर या किसी और कारण से अवकाश लिया।
- वह देखता है कि काम के स्थान पर हम अपने समय का उपयोग कैसे करते हैं।

6
आपके काम के संबंध में प्रतिज्ञाएं

बाइबल में काम से संबंधित कई वचन हैं। हमने पिछले अध्याय में देखा कि जो काम हम करते हैं, उसके लिए परमेश्वर हमें प्रतिफल देगा। हमारे प्रतिफल या पुरस्कार का एक भाग हमें तब मिलेगा जब हम प्रभु से स्वर्ग में मिलेंगे और हमारे प्रतिफल का एक भाग हमें इस वर्तमान समय में दिया जाता है। यहां कुछ प्रतिज्ञाएं दी गई हैं जिनकी हम यहां पृथ्वी पर रहते हुए आशा कर सकते हैं:

आपके हाथ के कामों पर आशीष

तेरे खत्तों पर और जितने कामों में तू हाथ लगाएगा उन सभों पर यहोवा आशीष देगा; इसलिये जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें वह तुझे आशीष देगा (व्यवस्था विवरण 28:8)।

यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा (व्यवस्था विवरण 28:12)।

पुरानी वाचा के अंतर्गत परमेश्वर के लोगों को कुछ प्रतिज्ञाएं दी गई हैं। पुरानी वाचा का परमेश्वर वही परमेश्वर है, जो नई वाचा का है। वाचाएं बदल गई हैं, परंतु वाचा का परमेश्वर, अपने लोगों को आशीष देने वाला उसका हृदय और उसकी योग्यता नहीं बदली है! अतः बिना किसी संदेह के, हम परमेश्वर से अपेक्षा कर सकते हैं कि वह हमारे हाथ के सभी कामों पर आशीष देगा। परमेश्वर से अपेक्षा करें कि वह आपके काम में आपको आशीष दे। प्रतिदिन जब आप अपने काम के स्थान पर जाते हैं, तो अपेक्षा करें कि प्रभु की आशीष आप पर होगी!

तरक्की प्रभु की ओर से आती है

और यहोवा तुझको पूंछ नहीं, किन्तु सिर ही ठहराएगा, और तू नीचे नहीं, परन्तु ऊपर ही रहेगा; यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं जो मैं आज तुझको सुनाता हूं, उनके मानने में मन लगाकर चौकसी करे (व्यवस्था विवरण 28:13)।

क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पश्चिम से, और न जंगल की ओर से आती है; परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है (भजन 75:6,7)।

परमेश्वर आपकी ओर से है। वही परमेश्वर है, जो आपकी तरक्की के लिए जगह तैयार करता है। परमेश्वर काम के स्थान पर परिश्रम को देखता है और वह आपकी तरक्की के लिए जगह बनाएगा। आपको "किसी को धक्का देकर आगे बढ़ने की", "अपने साथियों को नीचा दिखाने की", या अपने नियोक्ताओं को "रिश्वत देने की" ज़रूरत नहीं है। कर्मिष्ठता के साथ काम करें, अपना उत्तम से उत्तम योगदान दें और परमेश्वर आपकी तरक्की के लिए मार्ग बनाएगा। मुझे याद है कि जब मैं शिकागो में साफ्टवेयर कम्पनी के लिए काम करता था, तब मैं बहुत हताश हो गया। मैं प्रार्थना करता था, "परमेश्वर, मुझे तरक्की दीजिए क्योंकि मुझे नहीं लगता कि मैं अपनी पूर्ण क्षमता लगाकर काम कर रहा हूं। मैं विश्वास करता हूं कि मैं और ज़िम्मेदारी उठा सकता हूं और लोगों की टीम की अगुवाई कर सकता हूं।" परमेश्वर के वचन के अनुसार, मैं विश्वास करता था कि बढ़ती या तरक्की प्रभु की ओर से आती है। जल्द ही मेरी परिस्थितियां बदलने लगी और मेरे प्रबंधक ने मुझे लोगों की एक टीम का अधिकारी बनाया। तरक्की प्रभु की ओर से आई!

अपने हाथों के परिश्रम का फल

और यह भी परमेश्वर का दान है कि मनुष्य खाए–पीए और अपने सब परिश्रम में सुखी रहे (सभोपदेशक 3:13)।

क्या ही धन्य है हर एक जो यहोवा का भय मानता है, और उसके मार्गो पर चलता है! तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा; तू धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा। (भजन 128:1,2)।

सुन, जो भली बात मैंने देखी है, वरन जो उचित है, वह यह कि मनुष्य खाए और पीए और अपने परिश्रम से जो वह धरती पर करता है, अपनी सारी आयु भर जो परमेश्वर ने उसे दी है, सुखी रहे; क्योंकि उसका भाग यही है। वरन हर एक मनुष्य जिसे परमेश्वर ने धन सम्पत्ति दी हो, और उनसे आनंद भोगने और उसमें से अपना भाग लेने और परिश्रम करते हुए आनंद करने की शक्ति भी दी हो वह परमेश्वर का वरदान है। (सभोपदेशक 5:18,19)।

अपने परिश्रम में आनंद मनाने की योग्यता – आपके कामों के फल का आनंद उठाने की योग्यता – परमेश्वर की ओर से आशीष और वरदान है। परमेश्वर पर भरोसा रखें कि आप सचमुच आपके परिश्रम के फल का आनंद उठाएंगे। कई हैं जो परिश्रम करते हैं। परंतु अपने परिश्रम से जो कुछ वे पाते हैं, वह मानो हवा से उड़ जाता है। ऐसा लगता है कि उनकी आमदनी या वेतन छेदवाली थैली में डाली जा रही है। अन्य लोगों के पास ढेर सारा पैसा होता है, परंतु आनंद और शांति नहीं होती। भरपूर पैसा होने के बावजूद, असंतोष, लड़ाई झगड़े होते हैं। ऐसा आपके साथ होने न पाए। परमेश्वर पर भरोसा रखें कि आप आपके परिश्रम के फल को खा सकें और उसका आनंद उठा सकें।

आपके काम के सम्बंध में प्रतिज्ञाएं

- प्रतिदिन जब आप अपने काम के स्थान पर जाते हैं, तो अपेक्षा करें कि प्रभु की आशीष आप पर होगी!
- परमेश्वर काम के स्थान पर परिश्रम को देखता है और वह आपकी तरक्की के लिए जगह बनाएगा।
- अपने परिश्रम में आनंद मनाने की योग्यता – आपके कामों के फल का आनंद उठाने की योग्यता – परमेश्वर की ओर से आशीष और वरदान है।

7
नई दुनिया में काम

"तब सारे देश में जो कोई अपने को धन्य कहेगा वह सच्चे परमेश्वर का नाम लेकर अपने को धन्य कहेगा, और जो कोई देश में शपथ खाए वह सच्चे परमेश्वर के नाम से शपथ खाएगा; क्योंकि पिछला कष्ट दूर हो गया और वह मेरी आंखों से छिप गया है। क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूं; और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी। इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूं, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा। मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा; उसमें फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा। उसमें फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बूढ़ा जाता रहेगा जिसने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरनेवाला है वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रापित ठहरेगा। वे घर बनाकर उनमें बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे। ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएं और दूसरा बसे; वा वे लगाएं, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे। उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके बालबच्चे उनसे अलग न होंगे। उनके पुकारने से पहले ही मैं उनको उत्तर दूंगा, और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा। भेड़िया और मेम्ना एक संग चरा करेंगे, और सिंह बैल की नाईं भूसा खाएगा; और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा और न कोई किसी की हानि करेगा, यहोवा का यही वचन है।" (यशायाह 65:17—25)।

मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास

पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश–देश और जाति–जाति के लोग और भिन्न–भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाषी ठहरा। परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएंगे, और युगानयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे। जब तक वह अति प्राचीन न आया, और परमप्रधान के पवित्र लोग न्यायी न ठहरे, और उन पवित्र लोगों के राज्याधिकारी होने का समय न आ पहुंचा। तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रध ाान ही की प्रजा अर्थात् उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।"" (दानिय्येल 7:13,14,18,22,27)।

"परंतु हां, जो तुम्हारे पास है उसको मेरे आने तक थामे रहो। जो जय पाए, और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति जाति के लोगों पर अधिकार दूंगा। और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्**य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बर्तन चकनाचूर हो जाते हैं, जैसे कि मैंने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है।"** (प्र. वाक्य 2:25–27)।

स्वर्ग और अनंत काल कैसा होगा इस विषय में हममें से कई लोगों के पास भिन्न कल्पनाएं हैं। हममें से कुछ लोग सोचते हैं कि अनंत काल एक हमेशा के अवकाश का समय होगा जहां पर हमें केवल बादलों पर बैठकर सैर करने मिलेगा और हम अपने स्वर्गीय महलों में होंगे और स्वर्गदूतों के साथ परमेश्वर की स्तुति के गीत गाएंगे! परंतु बाइबल हमें इस विषय में कुछ बातें प्रगट करती हैं कि आने वाले संसार में किस बात की अपेक्षा करें। यशायाह का पद हमें यह दिखाता है कि नया आकाश और नई पृथ्वी के बन जाने के बाद भी लोग घर बनाएंगे और दाख की बारियां लगाएंगे। हम परिश्रम करेंगे और अपने हाथों से काम करने का आनंद मनाएंगे। इस तरह हम नई दुनिया में भी 'काम' करेंगे।

दानिय्येल और प्रकाशित वाक्य की पुस्तक से लिए गए अनुच्छेद हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर के लोग पृथ्वी पर मसीह के राज्य और प्रभुता के प्रशासन में सहायता करेंगे। मसीह जब आएगा और अपने राज्य को स्थापित करेगा, तब परमेश्वर के लोग मसीह के राज्य के प्रशासन में व्यस्त रहेंगे। अतः ऐसा लगता है कि हम हमेशा ही काम करते रहेंगे! हम काम का आनंद लें। यह परमेश्वर द्वारा नियुक्त, परमेश्वर द्वारा ठहरायी हुई क्रिया है। आपका काम उसके उद्देश्य को पृथ्वी पर आगे बढ़ाने का माध्यम बनने पाए।

हम नई दुनिया में भी 'काम' करेंगे!
अतः हम काम का आनंद लें।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्‌देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर. ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्‌देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

सभी मानते हैं कि विवाह परमेश्वर की कल्पना है – अतः हम विवाह का आनंद लेते हैं। हम जानते हैं कि कलीसिया परमेश्वर की कल्पना है – अतः हम कलीसिया का आनंद लेते हैं। सुसमाचार यह है कि काम भी परमेश्वर की कल्पना है। परमेश्वर ने उसकी स्थापना की है! अतः हम काम का आनंद लें।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org